(अपठित बोध)

1. **निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा नीचे दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए—** 1×5=5

शिक्षा का उद्देश्य है मनुष्य का सर्वांगीण विकास अर्थात् शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक शक्तियों का समग्र विकास। शिक्षा के द्वारा उन्हें केवल विकसित भर करना होता है। भारत की शिक्षा प्रणाली शिक्षा के उद्देश्य, 'सर्वांगीण विकास' से कोसों दूर है। यह जीवन को विकास की ओर नहीं ले जा रही, अपितु दासता की भावना को जन्म दे रही है। यह दासता है नौकरी की, मानसिक विचारों की। यह अकर्मण्यता सिखाती है और कोरी दासता है धन व स्वार्थ की। इस शिक्षा-प्रणाली में केवल पाठ्यक्रम और पुस्तकीय ज्ञान पर ही बल दिया जाता है, चरित्र और व्यवहार पर नहीं। योग्यता का पैमाना तीन घण्टे की परीक्षा को माना जाता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली का एक दोष यह है कि यह केवल धन कमाने के तरीके सिखाती है। माता-पिता मोटी रकम खर्च करके तरह-तरह के तकनीकी और व्यावसायिक कोर्स इसलिए करवाते हैं कि पढ़ाई के बाद सारा खर्च वसूल कर लिया जाए और किसी ऊँची नौकरी को हथिया लिया जाए। इस उच्च शिक्षा की प्रक्रिया में न कहीं नैतिक शिक्षा है न समाज के प्रति अपने दायित्व का बोध है। अपनी संस्कृति से तो इसका कोई वास्ता ही नहीं है। अत: हमारे राजनेताओं, नीति-निर्धारकों और शिक्षाविदों को तत्काल नई और कारगर शिक्षा नीति पर विचार करना चाहिए। तभी युवा असंतोष को शांत किया जा सकेगा। देश के निर्माण में उनकी शक्ति का उपयोग किया जा सकेगा।

(क) शिक्षा के उद्देश्य बालक के सर्वांगीण विकास में जो निहित हैं वह है— 1

(i) बच्चे का नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास।
(ii) शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्तियों का सम्पूर्ण विकास।
(iii) जीवन के लिए उपयोगी सभी क्षमताओं का विकास।
(iv) मानवीय गुणों का समुचित विकास।

(ख) मोटी रकम खर्च करके माता-पिता द्वारा बालकों को तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा दिलाने का मूल कारण होता है— 1

(i) बालकों को व्यवसाय और तकनीकी तौर पर निपुण बनाना।
(ii) समाजोपयोगी ज्ञान दिलाना।
(iii) लोक और समाज की सेवा के लिए होशियार बनाना।
(iv) ऊँची नौकरी दिलवाकर अकूत धन अर्जित करना।

(ग) वर्तमान शिक्षा प्रणाली का दोष है कि वह— 1

(i) उचित विषय का ज्ञान नहीं कराती।
(ii) पाश्चात्य संस्कृति सिखाती है।
(iii) असामाजिक बनाती है।
(iv) केवल धन कमाने के तरीके सिखाती है।

(घ) युवा-शक्ति के उपयोग से क्या किया जा सकता है? 1

(i) समाज में परिवर्तन
(ii) देश का निर्माण
(iii) भवन का निर्माण
(iv) मन्दिर का निर्माण।

(ङ) 'व्यावसायिक' शब्द में मूलशब्द एवं प्रत्यय है— 1

(i) वि + अवसायिक
(ii) व्याव + सायिक
(iii) विवसाय + इक
(iv) व्यवसाय + इक।